Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

मगध क्षेत्र में लोकनृत्य की परम्परा

डॉ0 विजय कुमार सिंह
संगीत शिक्षक,
रामबाबू + उच्च वि0 हिलसा, नालन्दा।

शोध आलेख सार– मगध भारतीय संस्कृति और सभ्यता के विकास का प्रमुख स्तम्भ के रूप में माना जाता है। मगध प्राचीन काल से ही राजनीतिक उत्थान, पतन, समाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक जागृति का केन्द्र बिन्दु रहा है। मगध प्राचीन भारत के 16 महाजनपदों में से एक था। आधुनिक पटना, गया, नवादा, औरंगाबाद, जहानाबाद, अरवल जिले इसमें शामिल थे। मगध का सर्वप्रथम उल्लेख अर्थववेद में मिलता हैं। मगध महाजनपद में शांति और अहिंसा का उपदेश देने वाले दो धर्मों का उदय हुआ जिसे बौद्ध धर्म और जैन धर्म के नाम से जाना जाता है। दोनों धर्मों में उस समय के प्रचलित लोक संगीत के द्वारा धर्मों का प्रचार–प्रसार करने में सहयोग लिया जाता था। किसी भी देश और राज्य के उत्थान के लिए संस्कृति का मूल तत्व होना आवश्यक है। बिहार में शास्त्रीय संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत, लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगाथा एवं फिल्मसंगीत इत्यादि कलाओं का विकास निरंतर प्रवाहित हो रही है। बिहार के मगध क्षेत्र में ध्रुपद, धमार, ख्याल, ठुमरी, दादरा एवं अन्य गायन शैलियों के अलावा लोकनृत्य, लोकगीत एवं लोकगाथा की परम्परा विकसित हुई। मगध क्षेत्र में जट–जटिन, खेलड़िन, नेटुया, बखो–बखोइन, जितिया नृत्य आदि लोकनृत्य मगध की गौरवशाली परम्परा रही है।

मुख्य शब्द :– मगध, महाजनपद, गौरवशाली, बौद्ध, जैन, शांति, अहिंसा, लोकसंगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकगाथा इत्यादि।

मानव संस्कृति का विकास प्राचीन काल से ही दो धाराओं में विभक्त रही है। इनमें से पहली जनसाधारण की, अर्थात् लोकसंस्कृति और दूसरी विशिष्ट जनों की, अर्थात् अभिजात वर्ग की संस्कृति रही है। मानव संस्कृति के ये दोनों ही रूप जन–जीवन से संबंध है, फिर भी लोकसंस्कृति स्वाभाविक

उन्मुक्त वातावरण में विकसित होने के कारण मानव प्रकृति के अधिक निकट हैं। यही कारण है कि आदिकाल में मानव जाति के लिए केवल लोकसंस्कृति ही प्रधान थी। बाद में समय–समय पर इसी लोकसंस्कृति के कुछ भाग परिमार्जिक होकर विशिष्ट– जन– सम्मत अभिजात संस्कृति का अंग बनता गया। लोककलाओं की परम्परा जनसाधारण में आदि युग से चली आ रही है। संगीत के क्रमबद्ध विकास के साथ–साथ लोकसंगीत की भी शैलियों में परिवर्तन होते रहा है। मगध क्षेत्र में लोकनृत्य की परम्परा आदि काल से आ रही है। शादी, विवाह, कृषि, पर्व त्योहार, संस्कार गीत, जातिगीत आदि की भी परम्परा रही है। वर्तमान समय मे मगध क्षेत्र में कई लोकनृत्य शैलियाँ विद्यमान है जो इस प्रकार है–

1. **जट–जटिन –** जट–जटिन मगध क्षेत्र की एक विशिष्ट नृत्य शैली है। यह नृत्य दो नर्तकों (एक पुरूष और एक स्त्री) के नोंक झोंक पर आधारित है। प्रेमिका अर्थात् जटिन अपने पति जट से बहुत समय से अलग रह रही होती है। जट और जटिन दोनों भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में समय बिताने के बाद आज मिले हैं। एक दूसरे से शिकायत भी करते हैं और प्रेमालाप भी। नृत्य के दौरान कई सामाजिक विषयों पर भी चर्चा होती है। प्राकृतिक घटनाओं में जैसे–गरीबी, भुखमरी ऐसे प्रसंग भी इस नृत्य में समाविष्ट होता है। जटिन बहुत दिनों के बाद लौटे पति से पूछती है कि तुम इतने दिन बाहर रहे तो मेरे लिए क्या उपहार लाये हो ? जट, जटिन का गुस्सा देखकर तरह–तरह के वादे करता है और कहता है कि तुम्हारी सारी इच्छायें पूरा करूंगा, तुम्हें टीका, नथिया, पायल, बिछिया सब लाकर दूंगा। मगध क्षेत्र में यह प्रचलित लोकगीत जट–जटिन नृत्य करते समय गाया जाता है और जट–जटिन नोंक–झोंक का भाव प्रदर्शित करता है।

जटिन – जब–जब टीकवा मँगइलु रे जटवा टीकवा काहे न लइले रे।
मोरी वाली उमरिया रे जटवा रतिया कहाँ गमउले रे।।

जट – टीकवा जब–जब मँगइलु गे जटिनिया टीकवा काहे ने पेन्हले गे।
तोरी वाली उमरिया जटिनिया रतिया कहाँ गमउले गे।।

चौहट – मगध क्षेत्र में चौहट एक विशेष प्रकार का गीत एवं नृत्य है। इस शैली की धुन एक ही रहती है और कम स्वरों में बंधी होती है। नृत्य का ढंग इस प्रकार होता है कि करीब दस–दस महिलाओं की एक–एक पंक्ति में एक दूसरे के सामन खड़ी रहती है। दोनों दलों में महिलाओं की संख्या निश्चित नहीं होती हैं। एक दल अपने नृत्य गीत गाते हुए सामने वाली महिलाओं के पास जाती है और प्रश्न

पूछते हुए वापस अपनी जगह आ जाती है, फिर दूसरे दल वाली महिलाएँ उस प्रश्न का उतर देते हुए आगे बढ़ती हैं और सामने पहुंचकर सर झुकाकर अपनी जगह पर वापस आ जाती है। चौहट गीत जो इस प्रकार है–

1. **जब अम्मा भेलई एक पतवा अहो रामा, चली अईलन ससुर जी नेयरवा अहो रामा**
2. **अबकी नियरवा भईया जानुँ फेरहुँ अहो रामा, खेले दुहुँ भादो के चौहटिया अहो रामा**

खेलड़िन – श्री गजेन्द्र नारायण सिंह के शब्दों में, नवादा जिला में कई गाँव हैं जिनमें खेलड़िन जाति के लोग रहते हैं। इनका खेलड़िन नाच बहुत मशहुर होता है और नाचने वाली पेशेवर औरतें होती हैं। अक्सर शादी–विवाह आदि के अवसर पर ये बुलायी जाती थी। विवाहोत्सव पर अपने गीतों से संस्कार गीत एवं गालियाँ देती थी। खेलड़िन लोकनृत्य मगध प्रमण्डल के नवादा जिला स्थित रजौली पहाड़ियों की तराई बसने वाली खेलड़िन जाति के लोग विशेषतः राजा के दरबारों में शादी विवाह के अवसर पर नृत्य किया जाता था। पन्द्रह बीस स्त्रियां कतार में विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ गीत गाते हुए नृत्य करती थी। नृत्य के पश्चात सामान्य जन एवं राजाओं द्वारा पारिश्रमिक एवं पुरस्कार वितरण होता था। वर्तमान समय में यह नृत्य विलुप्त सा हो गया है। खेलड़िन गीत मुझे नवादा में श्री ब्रह्मदेव प्रसाद प्रधानाध्यापक, बाल विद्या मंदिर मध्य विद्यालय, गढ़पर, नवादा भेंट वार्ता के आधार पर मुझे प्राप्त हुई जो इस प्रकार है–

गाँव के एक पूंजीपति महाजनवाँ कि ओहो हकै बड़ा सुदखोर।
सूद दर सूद ले है जोड़ से टूटी गइले धीरजा मोर।।

यह एक गरीब महिला की व्यथा है, जो कहती है कि समाज में मेरे कारण इतने प्रकार के काम होते हैं जैसे–कपड़ा रंगना, महल बनाना, अनाज उपजाना यह सब कार्य गाँव में होते हैं लेकिन गाँव के पूंजीपति सब ले लेते हैं और सूद दर सूद वसूली करते हैं। यहाँ मेरे धैर्य का बांध टूट जाता है।

नेटुआ – नेटुआ को मगध क्षेत्र में लौंडा नाच के नाम से भी जाना जाता है। यह भगवान विष्णु से संबंधित माना जाता है। मान्यता है कि भगवान विष्णु मोहिनी रूप धारण किये थे। पुरूष, स्त्री का भेष बनाकर नाचता है। विशेषतः शादी विवाह के शुभ अवसर पर यह नृत्य अवश्य होता है। नेटुआ की इतनी महानता है कि मगध क्षेत्र में छठ पूजा के अवसर पर भी कभी–कभी महिलाएँ भगवान भाष्कर से कहती हैं कि यदि मेरी मन्नत पूरी हो जायेगी तो आँचल पर नेटुआ का नाच कराऊँगी। मगध क्षेत्र में शादी – विवाह के अवसर पर संभ्रान्त परिवार की ओर से तवायफों को विशेष आमंत्रण दिया

जाता है और साधारण लोग शादी विवाह में नेटुआ का नाच कराने की परम्परा है। नेटुआ नाच मगध के साथ–साथ भोजपुर और मिथिलांचल क्षेत्र में भी लोकप्रिय हैं।

बखो–बखोइन– मगध क्षेत्र में बच्चें के जन्म होने के बाद बखो बखोइन आते हैं और आशीर्वाद देते हैं। यह दरअसल पमरिया का एक रूप है जिसमें पति पत्नी मिलकर गीतनृत्य प्रस्तुत करते हैं। वे मचिया पर बैठकर गाते बजाते हैं तथा खंजरी इनका मुख्य वाद्ययंत्र होता है। बखो बखोइन सोहर बधावा गाती है और उसकी ध्वनि से प्रसूति की पीड़ा भी कम होती है और वो मन्द मन्द मुस्काती है।

जितिया नृत्य –यह नृत्य गया एवं जहानाबाद जिला में सबसे ज्यादा प्रचलित है। यह नृत्य हरिजन जाति के लोगों में प्रसिद्ध है। सावन भादों के महीने में शाम के वक्त यह नृत्य किया जाता है। इसका मुख्य वाद्ययंत्र मांदर और ढोलक होता है। वादक दल ओखली पर बैठ जाता है और नृत्य समुदाय करने वाले कलाकार ओखली के चारों तरफ घूम–घूमकर चारों ओर नाचता है। यह बहुत ही मनमोहक नृत्य है। इसका प्रमुख गीत इस प्रकार है–

कोलिया में बुन देलि ललका मकइया तनि देख दइओ।

कौन खइतअ ललका मकइआ तनि देख दइओ।।

मगध क्षेत्र की यह विशाल संगीतनृत्य धरोहर अतुल्य हैं। भारत की सांस्कृतिक पृष्टभूमि पर इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, तभी तो गया निवासी कवि **मदन मोहन** द्वारा अनायास ही ये शब्द फुट पड़ते हैं–

हम हिअइ मगहिया, हमरा सब संसार जानअ हे।

गौतम और महावीर के धरती, के प्ररनाम करअ हे।।

स्रोत ग्रंथ सूची–

1. बिहार की संगीत परम्परा–गजेन्द्र नारायण सिंह
2. मगही लोकगीत के वृहद् संग्रह–डॉ0 राम प्रसाद सिंह
3. मगही लोकगीतों का समाज शास्त्रीय अध्ययन–वीणा सिंह
4. मगही संस्कार गीत–डॉ0 सम्पति अर्याणी
5. बिहारी की नाटकीय लोकविद्या– डॉ0 महेश कुमार सिन्हा
6. शोध प्रबंध– डॉ0 विजय कुमार सिंह